International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-01-2026; Accepted: 06-02-2026; Published: 21-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 160-162

राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य– धारा के कवि श्यामनारायण पाण्डेय: संक्षिप्त विवेचन

विक्रान्त ब्राह्मण
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी की राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा के कवि श्यामनारायण पाण्डेय ने अपने देश के प्रति प्रेम एवं निष्ठा का परिचय दिया है। श्यामनारायण पाण्डेय ने आधुनिककाल के प्रथम सोपन में भारतेन्दु द्वारा प्रवर्तित राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा का निर्वाह किया है। श्यामनारायण पाण्डेय से पूर्व मैथिलीशरण गुप्त, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान आदि राष्ट्रीयवादी कविताओं का सजृन कर रहे थे, पाण्डेयजी ने भी इसी काव्यधारा का अनुसरण किया पर उनका स्वर अन्य कवियों से भिन्न रहा। वह हिन्दी के ऐसे कवि थे जिन्होने बच्चों, युवाओं से लेकर बूढ़ों में एक समान वीर भावना का संचार किया। श्यामनारायण पाण्डेय का काव्य जनता को त्याग, बलिदान और कर्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाने के साथ–साथ देश, जाति, धर्म, संस्कृति के प्रति प्रेम व सम्मान का भाव पैदा करने का कार्य करता है। इनकी आरंभिक कविताओं में आध्यात्मिकता, देशभक्ति एवं जीवन के सुख– दुःख की भावपूर्ण अभिव्यक्तियाँ उपस्थित हैं तो बाद के साहित्य में प्रौढ़ता की स्पष्ट छाप दिखती है।

मूल शब्दः श्यामनारायण पाण्डेय, राष्ट्रीय–चेतना, संस्कृति, देशभक्ति, त्याग, स्वाभिमान, हल्दीघाटी, जौहर

प्रस्तावना
श्यामनारायण पाण्डेय राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के मुर्धन्य साहित्यकारों में गिने जाते हैं, जिनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप उनकी रचनाओं में दृष्टव्य होती है। जब पाण्डेय जी ने साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय छायावादी कविता का दौर चल रहा परन्तु पाण्डेयजी ने छायावादी काव्यचेतना का अनुसरण ना करके, आजादी के लिए जनता को एकत्रित करने एवं उनके हृदय में सुप्त पड़े स्वाभिमान, शौर्य एवं उत्साह को ऊर्जावान करने के ऊद्देश्य से वीररस प्रधान राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्य रचना का कार्य किया। अपनी लेखकीय यात्रा के आरम्भिक दिनों से लेकर इस यात्रा के अन्त समय तक उनके व्यक्तित्व में अनेक प्रकार के उतार–चढ़ाव आते रहे परन्तु कभी–भी यह उतार–चढ़ाव उनकी सृजनशीलता में बाधक बनकर लेखन कार्य को प्रभावित नहीं कर सके। आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनीतिक परिस्थियों ने उन्हें अनेक बार विचलित किया परन्तु उनकी रचना प्रक्रिया तनिक भी विचलित न होकर अबाध रूप से चलती रही। जो ओज उनकी कविताओं में दिखता है वह ओज उनके व्यक्तित्व में बद्धमूल था।

▪ व्यक्ति– श्यामनारायण पाण्डेय
श्याम नारायण पाण्डेय जी का जन्म सन् 6 अगस्त 1907 ई० (श्रावण कृष्ण षष्ठमी संवत् 1964) में आजमगढ़ जिला के एक छोटे से गाँव डुमरॉव में हुआ था। वर्तमान में डुमरॉव ग्राम मऊ जनपद के अन्तर्गत आता है। पाण्डेय जी ने 'जौहर' महाकाव्य की इक्कीसवीं चिनगारी में अपने जन्म स्थान का परिचय देते हुए उसे 'दुमग्राम' कहा जिससे ज्ञात होता है कि 'डुमरॉव' का पूर्व मे नाम द्रुमग्राम रहा होगा और सरलीकरण की प्रक्रिया में बिगड़ कर इसका नाम डुमरॉव हो गया। निम्न पंक्तियों के माध्यम से पाण्डेय जी ने अपने जन्म स्थल का परिचय दिया है–

"पावन 'निकुंभ' के अंदर
द्रुममय 'दुमग्राम' बसा है।
दक्षिण 'भैंसही' लहरती,
उत्तर बहती 'तमसा' है।।
वह विह्वल वीर पुजारी
यद्यपि 'दुमग्राम'– निवासी।
पर पावन करती रहती
उसको शंकर की 'काशी'।।"[1]

पाण्डेयजी की अल्पावस्था में ही उनके पिताजी का निधन हो गया था जिसकारण उनकी बाल्यावस्था अत्यन्त की संघर्षशीलता में व्यतीत हुई और इसका प्रभाव उनके जीवन व रचना क्षेत्र पर पड़ा। "वे नाम से ही नहीं, प्रत्युत् कर्म एवं व्यक्तित्व से भी श्याम नारायण सिद्ध हुए। कुशाग्र बुद्धि, प्रत्युत्पन्नमति, सर्वातिशायिनी प्रतिभा उन्हें जन्मना प्राप्त थी। सम वयस्क बालकों के बीच उनका व्यक्तित्व अलग दिखाई देता था। ब्राह्मण परिवार के संस्कारों के बीच उनका व्यक्तित्व अपना अलग आकार ग्रहण करने लगा। विलक्षणता पदे–पदे फूटने लगी।"[2] इनकी प्राथमिक शिक्षा बकवल की प्राथमिक पाठशाला में हुई और आगे की शिक्षा प्राप्त करने यह काशी आ गये सन् 1927 ई0 में इन्होंने प्रथमा उत्तीर्ण की और इसके बाद सन् 1934 ई0 में गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की और काशी में ही ब्रजमोहन दास केजरीवाल द्वारा संचालित माधव संस्कृत पाठशाला में अध्यापन कार्य करने लगे, अध्यापन कार्य करने के दौरान ही इन्होंने सन् 1944–45 ई0 में आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली जिसमें इनका विषय साहित्य था। 1944 में ही इनके विवाह के 4 वर्ष उपरान्त इनकी प्रथम अर्धांगिनी गायत्री देवी की मृत्यु हो गई जिससे इन्हें शर्मदा नाम की पुत्री प्राप्त हुई थी। सारंग तालाब काशी में रहते समय ही 6 वर्ष की शर्मदा का भी निधन हो गया और कुछ वर्षों पश्चात एक पुत्र को जन्म देकर इनकी दूसरी पत्नी सरस्वती भी परलोकवासी हो गईं तो पाण्डेयजी ने माना कि सारंग तालाब उनके लिए अशुभ है इसलिए काशी छोड़कर अपने पैतृक गाँव डुमरॉव आ गए जहाँ इन्होंने अपना तीसरा विवाह रमावती देवी से किया और जीवन के अन्तिम समय तक यहीं रहे। जीवन के अन्त समय के कुछ वर्षों में यह कई बीमारियों से ग्रसित रहे। सन् 1989 में 82 वर्ष की अवस्था में, राष्ट्रीय, सांस्कृति चेतना एवं वीर काव्य के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षकर पण्डित श्यामनारायण पाण्डेय इस लोक से विदा ले कर परलोक सिधार गए।

▪ श्यामनारायण पाण्डेय– कृतित्व
पाण्डेयजी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न हिन्दी के एक मुर्धन्य साहित्यकार थे। पाण्डेयजी का साहित्य में सिर्फ लगाव ही नहीं था, बल्कि उन्होने साहित्य को समाज सुधार व राष्ट्रीय चेतना का आधार बना करके हिंदी साहित्य में अपना एक अलग स्थान बनाया। श्यामनारायण पांडेय हिंदी साहित्य के एक प्रतिभासंपन्न

एवं सशक्त राष्ट्रीय चेतना के साहित्यकार माने जाते हैं। उन्होनें हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपर्ण योगदान दिया।

जब किसी साहित्यकार की रचनाओं का अनुशीलन किया जाता है, तो एक प्रश्न जो मन में उठता है वह है प्रभाव का। श्यामनारायण पाण्डेय पर प्रारम्भ में हरिऔध जी व गुप्तजी का प्रभाव जरूर रहा। पर इनका लेखन मार्ग अलग था। हरिऔध जी उनके उद्देश्य का परिणाम थे, पर शिल्प में उनके आदर्श नहीं बने।

प्रबंध काव्य

पाण्डेयजी की काव्य–यात्रा छायावाद के उत्कर्ष काल से प्रारम्भ होकर बीसवीं सदी के नवे दसक की रही है। जब पाण्डेयजी ने लेखन के क्षेत्र में प्रवेश किया तब प्रसादजी, निरालाजी, पंतजी व महादेवी जी अपने काल की श्रेष्ठ रचनाओं का निमार्ण कर रहे थे तब पाण्डेयजी ने इनका अनुकरण ना कर द्विवेदी युगीन कवियों मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी आदि की काव्य परम्परा को आगे बढ़ाया। पाण्डेयजी ने अपना लेखन मुक्तक रचनाओं से किया पर प्रकाशित प्रबंधकाव्य से हुए। कुछ प्रमुख कृतियों का संक्षिप्त विवरण व संवेदना पक्ष निम्नवत है–

1. तुमुल या 'त्रेता के दो वीर' (1928)

तुमुल पाण्डेयजी की प्रथम प्रकाशित रचना है। इसे पहले 'त्रेता के दो वीर' नाम दिया फिर इसका नाम परिवर्तित कर 'तुमुल' कर दिया। तुमुल का शाब्दिक अर्थ है भीषण या घामासान युद्ध। 'त्रेता के दो वीर' रचना का नाम पाण्डेय जी को वृहद व अरुचिकर प्रतीत हुआ जिसकारण उन्होने अपनी इस रचना का संसोधित संस्करण में नाम परिवर्तन कर दिया, "रामलीला के अवसर पर जीवन के प्रभातकाल से ही लक्ष्मण और मेघनाद का युद्ध देखने अधिक रस लेता था। उन दोनों भयंकर वीरों का तुमुल संग्राम मुझे अपनी ओर खींच लेता था। इसलिए साहित्य में प्रवेश करते ही मैंने सर्वप्रथम 'त्रेता के दो वीर' नामक खंडकाव्य लिखा, जिसमें मैंने उन्हीं दोनों वीरों के युद्ध का वर्णन किया। उसी पुस्तक का संवर्धित एवं संशोधित संस्करण 'तुमुल' नाम से है। पुस्तक नाम इसलिए बदल दिया कि पहला नाम मुझे अधिक अक्षरोंवाला लंबा तथा असाहित्यिक मालूम हुआ।"[3] तुमुल 19 सर्गों में सर्गबद्ध एक खण्डकाव्य है जिसे राम कथा के लक्ष्मण, मेघनाथ के प्रसंग को लेकर लिखा गया है। इसमें मूलतः लक्ष्मण और मेघनाथ के गुणों व युद्ध का वर्णन है। इसमें लोक मंगल के लिए नियम या नीति विरूद्ध कार्य को भी पाण्डेयजी अनुमन्य माना है। और स्वतंत्रता जब तक मिल जाये तक स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत रहने के लिए जनमानुष को प्रेरित किया है।

2. हल्दीघाटी (1939)

हल्दीघाटी से पाण्डेयजी को सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई इस रचना को पूर्ण करने में पाण्डेयजी को सात वर्षों का समय लगा। यह सत्रह सर्गों का एक वीर रस प्रधान महाकाव्य है। 'हल्दीघाटी' एक वर्णनात्मक महाकाव्य है, जिसकी मुख्य घटना हल्दीघाटी युद्ध का प्रसंग है जिसमें महाराणा प्रताप के अदम्य साहस और शौर्य का ओजपूर्ण वर्णन किया गया है। और इसके महाकाव्य को लक्ष्य कर परतंत्र भारत के वीर सपूतों में इतिहास का भान करा कर उनके सुप्त शौर्य को जागृत करा कर भारत को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने का प्रयत्न किया गया है। हल्दीघाटी में हिन्दू और मुस्लिम शासक के युद्ध को दो शासकों के युद्ध के रूप वर्णित कर इस रचना में पाण्डेयजी ने कहीं भी साम्प्रदायिकता जैसे नकारात्मक को भाव को नहीं आने दिया। इस रचना में पाण्डेयजी ने युद्ध का वर्णन ही नही किया अपितु उन कारणों को बड़ी स्पष्टता के साथ प्रस्तुत किया जों हल्दीघाटी के युद्ध का कारण बनीं।

3. जौहर (1944)

'जौहर' इक्कीस सर्गों का एक बृहत प्रबंध काव्य/ महाकाव्य है जिसका प्रथम प्रकाशन सन् 1944 ई0 में हुआ। इसमें पाण्डेयजी ने नारी चेतना का अद्भुत रूप प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ का उद्देश्य रानी पद्मिनी का दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए भारतीय नारियों के चारित्रिक उत्थान करना है। इसमें पाण्डेयजी भरतीय महिलाओं को रानी पद्मिनी के समान निर्भीक व आवश्यकता पडने व सतीत्व पर खतरा देख एक पल का भी विचार किए बिना आत्मबलिदान की भावना जागृत करने का प्रयास करते दिखाई देते हैं। जौहर पाण्डेयजी की नारी चेतना का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। 'हल्दीघाटी' व 'जौहर' के सृजन के बीचे का उद्देश्य बताते हुए पाडण्डेय जी का आत्मवक्तव्य है– "हल्दीघाटी लिखकर मैंने जनता के सामने एक भारतीय वीर पुरुष का आदर्श रखा और 'जौहर' लिखकर एक भारतीय सती नारी काय इसलिए नहीं कि कोई छंदों के प्रवाह में झूम उठे, बल्कि इसलिए कि भारतीय पुरुष 'प्रताप' को समझें और भारतीय नारियाँ 'पद्मिनी' को पहचानें।"[4] जौहर की अग्नि में चित्तौड़ की समस्त नारियों व दुधमुंही बालिकाओं का जौहर के लिए सज्जित अग्नि कुण्ड में समर्पण का जो बिम्ब पाण्डेयजी ने तैयार किया है। वह अत्यंत ही मार्मिक व हृदय–विदारक है। इस प्रकार का बिम्ब खींचकर पाण्डेयजी ने करुण रस के उत्कर्ष बिन्दु को स्पर्श किया है।

4. जय हनुमान (1956)

हनुमान के समुद्र पार कर सीता की खोज के लिए जाने की घटनाओं का वर्णन इस लघु खण्डकाव्य में प्रस्तुत किया गया है। यह तुलसीदास के 'रामचरितमानस' के 'सुन्दरकाण्ड' की कथा का कुछ परिवर्तन के साथ खड़ी बोली रूप है। इसी मूल कथा में बिना कोई परिवर्तन किये नवीनता का समावेश कराते हुए प्रस्तुत किया गया है। सुन्दरकाण्ड की अपेक्षा इस रचना में लंका के वैभव व लंका दहन का जीवन्त और विस्तरित वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इस रचना को क्रमबद्धता के साथ सात सर्गों में विभक्त कर प्रस्तुत किया गया है। इस रचना को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के मानव को उद्देश्य कर लिखा गया। यह रचना तुलसी के सुन्दरकाण्ड की तरह भक्ति भाव जागृति नहीं करती, अपितु कदाचार, अधर्म, अत्याचार व वैमनष्य के विरूद्ध संर्घष भाव को उत्पन्न करती है।

5. गोरा वध (1956)

गोरा वध वीर व करूण रस से परिपूर्ण सात सर्गों में विभक्त एक लघु खण्डकाव्य है। इस खण्डकाव्य में जौहर महाकाव्य के गोरा वध वाले प्रकरण को विस्तारित किया गया है। पाण्डेयजी ने गोरावध नामक खण्डकाव्य के माध्यम से राष्ट्रीयता, कर्तव्य परायणता, स्त्री सम्मान व रक्षा हेतु सर्वस्व न्यौछावर करने का भाव जागृत किया है। यह खण्डकाव्य खण्डित होते मानव मूल्यों के पूनर्निर्माण की ओर बल देता है।

6. शिवाजी (1970)

'शिवाजी' श्यामनारायण पाण्डेय का ऐतिहासिक इतिवृत्तात्मक घटना प्रधान तीसरा महत्त्वपूर्ण महाकाव्य है। इस माहाकाव्य को पाण्डेय जी ने 25 सर्गों में विस्तारित किया है। इस माहाकाव्य में छत्रपति शिवाजी के जन्म से लेकर सिंहगढ़ की विजय तक के घटना क्रम का शौर्यपूर्ण वर्णन है। पाण्डेयजी ने इस माहाकाव्य में ऐतिहासिक तथ्यों से बिना कोई छेड़छाड़ किय शिवाजी की विजयों का बड़ा ही ओजपूर्ण वर्णन प्रस्तुत किया है। पाण्डेय जी ने शिवाजी का व्यक्तित्व लोकनायकत्व की गरिमापूर्ण छवि के साथ एक उत्कृष्ट स्वतन्त्रता सेनानी, न्यायप्रिय शासक और स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वजाति के उद्धारक और पोषक योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया है। 'शिवाजी' राष्ट्रीयता की भावना से

ओत–प्रोत एक वीर काव्य है। इसमें सर्वधर्म समभाव की भावना का निर्वाह किया गया है। इसमें पाण्डेयजी ने शिवाजी के जीवन का विवेचन कर केवल महत्वपूर्ण युद्धों व कार्यों का ही वर्णन किया है।

7. बालिवध (1975)

बालिवध पाँच सर्गों का खण्डकाव्य है इसका पहला प्रकाशन सन् 1975 हुआ। तुलसीदास के 'रामचरितमानस' के 'किष्किंधाकाण्ड' की मूल कथा पर इसका कथानक आधारित है। इस खण्डकाव्य में राम–सग्रीव मैत्री प्रसंग व बाली वध प्रसंग का विस्तार देते हुए न्याय, नीति व अदार्शवाद की अवधारणा को प्रस्तुत किया गया है। स्वातन्त्र्योतर भारत में गिरते सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों से व्यथित होकर पाण्डेय जी ने इस खण्डकाव्य की रचना की और राम चरित्र के माध्यम से प्राचीन गौरव व सांस्कृतिक मूल्यों का स्मरण करा कर भारती समाज के गिरते मूल्यों को पुर्नस्थापित करने का प्रयास किया है।

मुक्त काव्य

पाण्डेयजी ने अपनी साहित्यक यात्रा मुक्त रचनाओं से ही की थी। पाण्डेय जी की मुक्त रचनाऐ तत्कालीन प्रसिद्ध पत्रिकाऐं सरस्वती, माधुरी, कल्याण आदि में प्रकाशित होती रहीं। पुस्तकाकार रूप में पाण्डेय जी की मुक्त कविताओं का प्रथम प्रकाशन सन् 1946 में 'आरती' काव्य संग्रह के रूप में हुई। इस काव्य–संग्रह में पाण्डेयजी की प्रारम्भ से लेकर सन् 1945–1946 तक की समस्त फुटकल कविताओं का संकलन है। इस काव्य संग्रह के बारे में पाण्डेयजी का कथन है "इस पुस्तक में मेरे काव्याभ्यास से लेकर आज तक की स्फुट कविताओं का संकलन है। एक विषय की नहीं, एक रस की नहीं, अनेक विषयों की, अनेक रसों की कविताओं का यह स्तवक आपके सामने है।"[5] आरती' में पाण्डेयजी के लेखन शैली एवं छन्द वैविध्य का वह स्वरूप दिखता है। जिससे पता चलता है कि वह सिर्फ वीर रस के कवि नही है उनकी कविता में श्रृंगार भी है। आरती' में पाण्डेयजी की आध्यात्मिकता एवं दास्यभाव मूलक भक्ति भावना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति दिखाई देती है और वह अपने दुःखों से मुक्ति एवं आत्मोद्धार हेतु प्रभू से प्रार्थना करते हैं। इसमें पाण्डेयजी के कौमार्य में रचित कविताऐं भी हैं जिनमें घोर श्रृंगारिकता है कुछ कविताओं में विवाह की उत्सुकता और प्रिया मिलन की आतुरता व्यक्त हुई है।

अनूदित काव्य

पाण्डेयजी मौलिक काव्य सजृन के की ही जाने जाते हैं पर 'आरती' काव्य संग्रह के परिशिष्ट में कुछ रूसी कविताओं का भी उन्होने पद्यानुवाद किया है। इसके अलावा उनका एक मात्र अनूदित ग्रन्थ 'रूपान्तर' है जिसका प्रकाशन सन् 1948 ई0 में हुआ। इसमें संस्कृत के प्रसिद्ध कवि कालिदास के महाकाव्य 'कुमारसम्भव' के सत्रह सर्गों में से प्रारम्भ के सात सर्गों का पद्यानुवाद 'रूपान्तर' नाम से किया है। इस रचना में पाण्डेय जी ने संस्कृत के मूल भावों को खड़ीबोली में यथावत रखने का भरकस प्रयास किया है। किसी रचना का एक भाषा से दूसरी भाषा में पद्यानुवाद करना बहुत ही दुरूह कार्य होता है। पाण्डेयजी ने कई स्थानों पर संस्कृत के मूल शब्द का अनुवाद प्रस्तुत किया है जिस कारण से कुछ स्थानों पर मूल भावों ह्रास हो हुआ है।

संदर्भ सूची

1. श्यामनारायण पाण्डेय ग्रंथावली–2 (जौहर), सं. पुरुषार्थ सिंह, पृष्ठ–251
2. भारतीय गौरव के उद्गाता: श्यामनारायण पाण्डेय, वेद प्रकाश उपाध्याय, हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयागराज संस्करण–2020 पृ0 1
3. श्यामनारायण पाण्डेय ग्रंथावली–1, सं. पुरुषार्थ सिंह, तुमुल, पृष्ठ–272
4. श्यामनारायण पाण्डेय ग्रंथावली–1, सं. पुरुषार्थ सिंह, तुमुल, पृष्ठ–251
5. श्यामनारायण पाण्डेय ग्रंथावली–1, सं. पुरुषार्थ सिंह, तुमुल, पृष्ठ–301